

अगेनी अंखियूं फूटियूं, भूंडा हाणें तूं कीक सांगाए।
ही जोगवाई हथ न रेहेंदी, पोय पर न थिंदिए कांए॥६॥

पहले भी तेरी आंखें फूटी रहीं। हे पापी! अब तो तू कुछ पहचान। यह तन, समय, सामग्री हाथ में नहीं रहने वाली। पीछे तेरा क्या हाल होगा? (बुरी हालत होगी)।

अगेतां अकरमी थेओ भूंडा, हांणे तूं पाण संभार।
पिगे पले पले तोके थका, भूंडा अजां न वरे तोके सार॥७॥

पहले भी तू कर्महीन हो गया था। अब तो तू अपने को संभाल। प्रीतम तरह-तरह से कहकर थक गए। हे पापी! तुझे अभी भी सुध नहीं आती।

वभिरकां पिरी तो कारण, हांणे आया माया मंझ।
धाऊं पाइंदे पिरी वभिरकां, तोके थीअण आई संझ॥८॥

अब प्रीतम माया में तेरे लिए दूसरी बार आये हैं। दूसरी बार प्रीतम जोर-जोर से पुकार कर कह रहे हैं। तेरा समय समाप्त होने को आया है (तेरी समझ का समय हो गया है)।

अंग मरोडे न उथिए, पासे फजर पसी हींए मंझ।
पोए कारी रात में कीं न सुझे, से तां डुखे संदानी डंझ॥९॥

यदि आलस्य छोड़कर 'अब भी सवेरा हो गया है' ऐसा हृदय में विचार कर नहीं उठता, तो पीछे अंधेरी रात में कुछ भी दिखाई नहीं देगा और हमेशा के लिए दुःख ही दुःख हो जाएगा।

तारतम तूतां न्हार विचारे, जा पिरी आंदो तो कारण।
हेतरा भट बरंदे मथे, तोके अजां सा न वंजे धारण॥१०॥

हे जीव! प्रीतम तेरे लिए जो जागृत बुद्धि का ज्ञान (तारतम) लाए हैं, उसको विचारो और देखो। इतनी आग (ज्ञान की फटकार) तेरे माथे पर हुई फिर भी तू नींद (माया) को अभी तक नहीं छोड़ता।

॥ प्रकरण ॥ १४ ॥ चौपाई ॥ ३४१ ॥

मूंहजा जीव अभागी रे, हांणे तूं जिन चुके हिन वेर।
तो के नी हिन अंधारे मंझां, ई वेओ कढंदो केर॥१॥

हे मेरे अभागे जीव! तू इस बार मत भूलना। तुझे इस माया के अंधेरे से इस तरह दूसरा कौन निकालेगा?

गुण तूं हिकडो न्हार संभारे, संदो सिपरियन।
जाग तूं मूंजा जीव अभागी, को सुते सारूथी मन॥२॥

हे अभागे जीव! प्रीतम के एक भी गुण को तू देखे और पहचाने तो तू जाग जाएगा। मन में सुख समझ कर क्यों सो रहा है?

पेरो वेण तो केहा कढया, से कुरो मथियण मन मंझा।
बुध मन तोहेजा वेही रेहेंदा, हांणें क्रोध कढंदे साहा॥३॥

पहले तूने क्या कहा था? तूने मन में क्या विचार किया है? तेरे मन और बुद्धि यहीं बैठे रह जाएंगे। अब धनी तुझ पर गुस्सा करके लै जाएंगे।

जीव निरजो को थिए, तोके अजां न लगे घाए।

सिपरी संभारे करे, भूंडा को न उडाइए अरवाए॥४॥

हे जीव! तू इतना निर्लज्ज (बेशर्म) क्यों हो गया? तुझे अभी भी चोट नहीं लगी। हे पापी जीव! धनी की पहचान कर, तू अपनी अरवाह उड़ा क्यों नहीं देता (तन क्यों नहीं छोड़ देता)।

जे तूं चुके जीव हिन भेरां, त तां सुणज मूंजी गाल।

जीव कढंदुस जोरे तोके, करे भुछा हवाल॥५॥

हे जीव! मेरी बात सुन। यदि तू इस बार भी चूक गया तो तुझे जबरदस्ती निकाल कर बुरी हालत करेंगे।

अगेनी तो भुछी केई, जीव हाणें तूं पाण संभाल।

सजण तोके साणें कोठींन था, खिल्ली करींन था गाल॥६॥

पहले भी तूने बुरा किया। हे जीव! अब तो तू अपने आपको संभाल। प्रीतम तुझे घर बुलाने तथा तेरी हंसी उड़ाने आए हैं।

हो ससुई सा पण ई चोए, आऊं डियां कोड मथां।

पुनूं संदी बधाई को आणे, ते के डियां ल्हाए हथां॥७॥

दृष्टान्त देते हैं—ससी भी इस प्रकार से कहती है कि यदि मुझे कोई मेरे पुनू की बधाई देता है कि तेरा पुनू आ गया है तो उसको मैं अपने हाथ से अपने करोड़ों सिर काटकर दे दूंगी।

नोट—(ससी और पुनू दो प्रेमी पंजाब में हुए। पुनू के मरने पर ससी रोती-रोती कहती है कि यदि कोई मुझे मेरे पुनू के आने की झूठी बधाई ही दे दे कि तेरा पुनू आ गया तो मैं उसके बदले उसे करोड़ सिर अपने हाथ से दे दूंगी)।

ए वेण न न्हारिए, फिट फिट रे भूंडा जीव।

तो जो ओठो पण वेओ को न्हारे, हिन गाले वेओ घणूं लही॥८॥

धिक्कार है तुझे, पापी जीव! तू इन वचनों को भी नहीं विचारता। तेरी नकल कोई नहीं करेगा (तेरी दुष्टता की नकल कौन करेगा। तुम गुणहीन हो)। इन बातों से दूसरे को ज्ञान मिलेगा।

तोहे तोके सांगाय न वरे, तूं थेओ को ई।

न्हार संभारे पाण पांहिंजो, जे गालों करींन था पिरिं॥९॥

हे जीव! तू ऐसा क्यों हो गया? तुझे अब भी पहचान नहीं होती। तू अपनी तरफ देख और पहचान कर कि तूने परमधाम में धनी से क्या बातें की थीं?

से वेण तूं को विसारिए भूंडा, जे पिरि चेया तोके पाण।

जे वेण विचारिए हिकडो, त हंद न छडिए निरवांण॥१०॥

हे पापी! तू उन वचनों को (जो परमधाम में कौल किए थे) क्यों भूल गया है जो प्रीतम ने स्वयं तेरे को कहे। यदि तू उनके एक वचन को भी विचारे तो उनके बताए ठिकाने (परमधाम) को नहीं छोड़ेगा।

अभागी तोके ते चुआं अकरमी, जे न पसां तोमें हाल।

सत दाण तोके चुआं सुहागी, जे करिए कीं कीं भाल॥११॥

हे जीव! तुझे पापी कहूं या अभागा कहूं। तेरी हालत को बदलते नहीं देखती हूं। यदि तू अपनी थोड़ी सी संभाल कर ले, तो तुझे सौ बार सुहागी (सौभाग्यशाली) कहूंगी।

॥ प्रकरण ॥ १५ ॥ चौपाई ॥ ३५२ ॥

वी वलामणी

मूंजा जीव सुहागी रे, हाणें जिन छडिए पिरि पेरे।

वभेरकां तो कारणे, पिरि आया हिन वेरे॥१॥

हे मेरे सुहागी जीव! इस बार प्रीतम के चरणों को नहीं छोड़ना है। इस बार दुबारा तेरे वास्ते प्रीतम आए हैं।

पिरिए संदा गुण संभारे, झल्ल तूं पिरिए पेरे।

सांणे तोके सुख पुजाइंदा, वेओ कोठे ईय केरे॥२॥

प्रीतम के गुणों को याद कर और उनके चरणों को पकड़ ले। वह तुझे सुख से घर (परमधाम) पहुंचा देंगे। इस प्रकार से तुझे कौन बुलाएगा?

खिल्ली कूडी कर गालडी, सुजाण पोतेजा पिरि।

तोजे काजे आप विधाऊं, विनी भेरां न्हार कीं॥३॥

हंसकर, रोकर बातें कर तथा अपने प्रीतम की पहचान कर। तेरे वास्ते ही धनी दूसरी बार आए हैं। तू देखता क्यों नहीं?

सजण ए कीं छडजे, तूं तां न्हार केडा आईन।

पिरिए तोसे पाण न रख्यो, से न संभारजे कीं॥४॥

ऐसे प्रीतम को कैसे छोड़ा जाए? तू उनको देख वह कैसे हैं? धनी ने तुझसे कुछ छिपा नहीं रखा है। उनको क्यों याद नहीं करता?

कोड करे तूं केड बांधीने, थी पिरिए जे पास।

सिपरी तूं सुजाण पांहिंजा, छड वेओ मंडे साथ॥५॥

तू खुशी से कमर कसकर प्रीतम के पास जा। तू अपने प्रीतम की पहचान कर और दूसरों का साथ छोड़ दे।

पाणजे साथ के परमें चोयज, जे तो उकले वेण।

साथ तां कीं न सांगाय सुहागी, तोहे पांहिंजा सेण॥६॥

अगर तुझे यह वाणी समझ में आ जाए तो अपने साथियों को भी बताना (कहना)। हे सुहागी जीव! साथ को तो कुछ भी पहचान नहीं है। फिर भी वह अपने साथी हैं।

॥ प्रकरण ॥ १६ ॥ चौपाई ॥ ३५८ ॥